'पद्मपुराण' और 'मानस' के राम

डा० लक्ष्मीनारायण दुबे

जैनाचार्य रविषेण कृत 'पद्मपुराण'का जैन साहित्यमें वही स्थान है जो कि हिन्दी साहित्यमें 'रामचरितमानस'का। 'पद्मपुराण' सन् ६७८ ई० में लिखा गया जब कि 'रामचरितमानस' सन् १५७४-७७ के मध्य। सम्राट् हर्ष तथा हर्षोत्तरकालीन परिस्थितियाँ ही रविषेणके समयके परिवेशका निर्माण करती हैं। हर्षने ४० वर्ष तक शासन किया था। उनकी मृत्यु सन् ६४८ में हुई थी। रविषेणके समयमें ह्युआन-चुआंग एवं इत्सिंग नामक यात्रियोंने हमारे देशकी यात्रा की थी और अपने महत्वपूर्ण वृत्तांत लिखे थे। तुलसीदास (सन् १५३२-१६२३) के समयमें अकबर और जहाँगीर सम्राट् थे।

आचार्य रविषेण तथा गोस्वामी तुलसीदास दोनों ही रामचरितकी गरिमाका गायन करते हैं। दोनोंने रामकथाकारोंको अपनी प्रणति प्रेषित की है। दोनों ही रामाख्यानको प्रश्न अथवा शंकासे स्थापित करते हैं। दोनोंकी महत्त्वपूर्ण कृतियोंमें साम्यकी अपेक्षा वैषम्यके प्रावधानोंका आधिक्य है। दोनों आदिकवि वाल्मीकि के प्रति ऋणी हैं।

दोनों रचनाकारोंका दर्शन एक-दूसरेका विरोधी है। एक वेदनिंदक है तो दूसरा वेदोंके प्रति परम निष्ठावान्। रविषेण जहाँ रामको महापुरुष मानते हुए अपने कर्मके द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेवाले भव्य प्राणीके रूपमें निरूपित करते हैं, तुलसी वहाँ उन्हें मर्यादापुरुषोत्तमके साथ ही साथ परब्रह्म निरूपित करते हैं जिन्होंने धर्मके रक्षार्थ अवतार ग्रहण किया। दोनोंके दृष्टिकोणोंमें मूलभूत अन्तर होनेके कारण दोनोंकी कथाओंमें भी पर्याप्त अन्तर आ गया है। रविषेण अष्टम बलभद्र रामके चरित्रको वर्णित करके जैनधर्मकी चेतनाको पाठकों तक सम्प्रेषित करना चाहते हैं परन्तु तुलसी 'विधि हरि सम्भु नचावन हारे' पर ब्रह्मरूप श्रीरामका चरित्र-गायन करके राम-भक्तिका परमोन्नयन करते हैं। रामकथाको जो उदात्त स्थिति तथा गरिमा तुलसीने दी, वह रविषेणसे सम्भव नहीं हो सकी। तुलसीने मर्यादाका पालन किया है परन्तु रविषेण कहीं-कहीं कामोद्दीपन स्थितिको जन्म देते हैं।

दोनों कृतियोंके नायक श्रीराम हैं। 'पद्मपुराण'में उनका नाम पद्म भी है। रविषेणके राम नौहजार रानियोंके स्वामी तथा मोहाभिभूत हैं परन्तु तुलसीके राम एक पत्नीव्रतधारी, तपस्वी और मोहभंजक हैं।

दोनोंने रामके व्यक्तित्वको अत्यन्त आकर्षक, मार्मिक तथा प्रभावोत्पादक रूपमें उपस्थित किया है। दोनोंने रामको शक्तिके भण्डार और शीलके अतुलनीय निधानके रूपमें प्रस्तुत तथा चित्रित किया है। 'पद्मपुराण'में तपोवनकी स्त्रियाँ राम-लक्ष्मणको देखकर मतवाली हो जाती हैं परन्तु 'मानस'की ग्रामवनिताएँ मुग्धावस्थाका वरण करती हैं। 'पद्मपुराण' या 'पद्मचरित'में रावणका वध रामके हाथों न होकर लक्ष्मणके द्वारा होता है क्योंकि जैन मान्यतानुसार नारायणके हाथों प्रतिनारायणका वध होता है, बलदेवके हाथों नहीं। राम बलदेव हैं, लक्ष्मण नारायण और रावण प्रतिनारायण। इसी कारणसे 'पद्मपुराण'में रामका चरित्र लक्ष्मणके समक्ष दबा-सा प्रतीत होता है।

शूर्पणखाकी नाक काटना, बालिको छिपकर मारना आदि कार्य 'मानस'के राम करते हैं परन्तु 'पद्मपुराण'के राम इनसे स्पष्टतया बचे रहनेके कारण, परवर्ती आलोचनाके पात्र नहीं बन सके। 'पद्मपुराण'की

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाँति 'मानस'में सीताकी अग्नि-परीक्षाका परवर्ती प्रसङ्ग आगे नहीं बढ़ पाया। रविषेणके राम अन्तमें केवली होते हैं जब कि तुलसीके रामका अन्त आख्यानमें समाविष्ट नहीं हो पाया।

तुलसीकी रामकथाके कतिपय पात्र यथा मंथरा, शवरी, अनसूया, सम्पाति, वसिष्ठ, विश्वामित्र, शिव, निषाद, काकभुशुण्डि और सुलोचनाको रविषेणने नगण्य स्थिति प्रदान कर दी है। दोनोंने ही श्रेष्ठ तथा साहित्यिक संस्कृत तथा अवधी भाषाकी निदर्शना की है। वीर रसके वर्णनमें रविषेण तुलसीसे आगे हैं। 'पद्मपुराण'में 'मानस'से दुगुनेसे भी अधिक छन्दोंका उपयोग हुआ है। रविषेणने कतिपय छन्दोंको स्वयं निर्मित किया है।

दोनों ही मानव हितार्थ धर्मका विधान करते हैं। 'पद्मपुराण'में भारतके सुख-शांति-वैभवकी समन्वित संस्कृतिका वास्तविक चित्र है और 'मानस'में आदर्शनिष्ठ संस्कृतिका।

'नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि'के आधारपर यह अनुमान है कि शायद तुलसीने 'पद्मपुराण'को भी देखा हो। यह तो नहीं कहा जा सकता कि रविषेणने तुलसीको प्रभावित किया था परन्तु, चूँकि, जैन कवि बनारसीदास उनके परिचित मित्र थे, अतएव, उनके माध्यमसे तुलसीने 'पद्मपुराण'की कतिपय उक्तियाँ सुनी या पढ़ी हों। तुलसीपर जैनधर्मका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

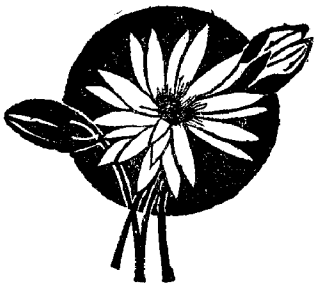

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org